रोहतास महिला महाविद्यालय सासाराम, अध्ययन सामग्री, संस्कृत, स्नातक भाग 2,पत्र 3, दिनांक 30.5.20

5 'शुकनासोपदेश' में वर्णित 'लक्ष्मी की प्रकृति' (स्वभाव)

महाकवि बाणभट्ट विरचित 'कादम्बरी' के कथासार के अध्ययन के पश्चात् आप इससे भली भांति परिचित हो चुके हैं कि बाणभट्ट अपनी अद्भुत क्षमता से किस प्रकार अपनी कथा में विविध प्रकार के प्रसंगों अथवा विषयों का समावेश कर कथानक को आगे बढ़ाने एवं अपने कवित्व के मार्मिक चित्रण में सफल हुए हैं। कथानक के विस्तार-क्रम में चन्द्रापीड को राज्याभिषेक से पूर्व युवावस्था में उत्पन्न होने वाले दोषों से बचने के लिये मन्त्री शुकनास के द्वारा उपदेश दिया गया। जिसमें विशेष रूप से 'लक्ष्मी की प्रकृति', गुरूपदेश आदि वर्णित है। इसे ही' शुकनासोपदेश' कहा गया है। शुकनासोपदेशसार के अध्ययन के पश्चात् आप इसके कथानक से पूर्णत: परिचित हो चुके हैं। अब विशेष रूप से 'लक्ष्मी की प्रकृति' (स्वभाव) का कतिपय मूल गद्यांशों के द्वारा वर्णन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम लक्ष्मी के स्वभाव का वर्णन करने से पहले उनमें विद्यमान गुणों की उत्पत्ति कहाँ एवं किन-किन वस्तुओं से हुई है, उसका उल्लेख करना अपेक्षित है -

गद्यांश:- इयं हि सुभटखड्गमण्डलोत्प्लवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मी:
क्षीरसागरात्-पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्,
उच्चै:श्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहशक्तिम्, मदिराया मदम्,
कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्यम्, इत्येतानि सहवासपरिचय-वशाद्विरहविनोदचिह्नानि
गृहीत्वेवोद्गता।

Scanned by CamScanner

शब्दार्थः- सुभटखड्गमण्डलोत्प्लवनविभ्रमभ्रमरी=वीर सैनिकों के तलवार कलाप रूपी कमल वन में भ्रमर करने वाली भ्रमरी अर्थात् भौंरी। इयम् लक्ष्मीः=यह लक्ष्मी। हि=निश्चित रूप से। सहवासपरिचयवशात्=सहवास के परिचय के कारण से। पारिजातपल्लवेभ्यः रागम्=मन्दार के पल्लवों से अनुराग को। इन्दुशकलात् एकान्तवक्रताम्=चन्द्रमा की कला से अधिक टेढ़ापन। उच्चैःश्रवसः= उच्चैश्रवा नामक घोड़े से। चञ्चलताम्=चपलता को। कालकूटात्=विष से। मोहशक्तिम्=मोहित करने वाली शक्ति को। मदिरायाः मदम्=मदिरा से उन्मादकता को। कौस्तुभमणेः अतिनैष्ठुर्यम्=कौस्तुभ मणि से अधिक निर्दयता को। इति एतानि=इन ऊपर कहे गये। विरहविनोदचिह्नानि=वियोग के समय मन को बहलाने के चिह्नों को। गृहीत्वा=ग्रहण करके। क्षीरसागरात्=दुग्ध समुद्र से। उद्गता इव=मानों निकली हो।

भाषानुवादः- श्रेष्ठ योद्धाओं के तलवार रूपी कमलवन में भ्रमण करने वाली भ्रमरीरूपा यह लक्ष्मी साथ में रहने से परिचय बढ़ जाने के कारण वियोग के समय में मनोविनोद के चिह्न रूप में पारिजात के कोमल पल्लवों से राग (आसक्ति), चन्द्रकला से अत्यन्त कुटिलता, उच्चैश्रवा नामक इन्द्र के घोड़े से चञ्चलता, हलाहल विष से मोहन-शक्ति, मदिरा से मादकता और कौस्तुभ मणि से क्रूरता आदि लक्षणों को लेकर ही मानों यह लक्ष्मी क्षीरसागर से बाहर निकली है। यह लक्ष्मी कहीं भी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती और न ही इसे वश में किया जा सकता है। अब यहाँ से लक्ष्मी के स्वभाव का वर्णन किया जा रहा है -

गद्यांशः - न ह्येवंविधमपरमपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्या। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। दृढगुण-पाशसन्दाननिष्पन्दीकृतापि नश्यति।
उद्यामदर्पभटसहस्रोल्लासिता पञ्जरविधृताप्यपक्रामति।
मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि प्रपलायते।

अन्वयः- इह जगति नहि एवंविधं अपरं किञ्चित् अपरिचितम् अस्ति, यथा इयम् अनार्या। लब्धा अपि खलु दुःखेन परिपाल्यते। दृढगुणपाशसन्दाननिष्पन्दीकृता अपि नश्यति। उद्दामदर्प-भटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृता अपि अपक्रामति। मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटा-परिपालिता अपि प्रपलायते।

शब्दार्थः- इह जगति = इस संसार में। नहि एवंविधं=इस प्रकार के परिचय को नहीं रखने वाला। अपरम्=कोई दूसरा, अपरिचितम्=अपरिचित नहीं है, यथा इयम् अनार्या=जैसी यह दुष्ट लक्ष्मी है, लब्धा अपि खलु=प्राप्त हो जाने पर भी निश्चित रूप से, दुःखेन=कठिनाई से, परिपाल्यते=रखी जा सकती है। दृढगुणपाशसन्दाननिष्पन्दीकृतापि=राजोचित गुणसमूह के दृढ बन्धन से बाँधी जाने पर भी। नश्यति=नष्ट हो जाती है, उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासिता पञ्जरविधृतापि=उत्कट अंहकार वाले सहस्रों योद्धाओं के द्वारा चमकाये जाने वाले तलवार के समूह रूप पिञ्जरे में बन्द कर रखी जाने पर भी, अपक्रामति=भाग जाती है, मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि=गण्डस्थल (कपोल) से टपकने वाले मदजल से अन्धकार कर देने वाले गजराजों के द्वारा रचित सघन समूह से सुरक्षित रखी जाने पर भी, प्रपलायते=भाग जाती है।

व्याकरणम् - न आर्या =अनार्या (नञ् स०), लब्धा = लभ् + क्त + टाप्, परिपाल्यते = परि+पाल् + कर्मणि यक्, प्र०पु०, ए०व०।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner